d{kk&d{k çcU/ku

सामग्री तथा उपकरण :–

विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त तथा सामान्य बच्चों को एक साथ पढ़ाते समय उन विशिष्ट (अक्षमताओं से ग्रस्त) बच्चों का विशेष ध्यान रखकर यथोचित व्यवस्था करना आवश्यक होगा। विभिन्न प्रकार की अक्षमता वाले बच्चों की आवश्यकताएं भी भिन्न–भिन्न होंगी। प्रत्येक अक्षमता वाले बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान कर उनकी सुविधा तथा सीखने की क्रिया को सुगम बनाने के लिए कक्षा में बैठने की व्यवस्था–फर्नीचर, मोटी कलम, पेन्सिल, पुस्तक होल्डर, विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री तथा उपकरणों की व्यवस्था करना आवश्यक होगा। यह भी आवश्यक होगा कि सभी बच्चे इन बच्चों से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें। उनकी उपस्थिति/अनुपस्थिति में कोई अशोभनीय बात न कहें। ऐसे बालको को अपनी बात कहने का अवसर देना चाहिए। विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों को नाटक, संगीत, खेलकूद एवं प्रार्थनासभा में प्रतिभाग करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

सामान्य विद्यालयों में अन्य बच्चों के साथ पढ़ने वाले अक्षमताग्रस्त बच्चों को ध्यान में रखते हुए कक्षा कक्ष में क्रियाकलापों का निम्नवत् आयोजन सहायक होगा।

१. श्रवण सम्बन्धी कठिनाई :

श्रवण सम्बन्धी अक्षम बच्चों को आगे बैठाने की व्यवस्था अपेक्षित है। श्रवण शक्ति की कमी को पूरा करने के लिए दृश्य संकेतों तथा नेत्र संकेतों का प्रयोग किया जाना चाहिए। संवेगात्मक अवधारणाओं – जैसे प्रसन्नता, क्रोध, आश्चर्य, घृणा, दुःख आदि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नाटकीय स्थिति में बोलना उपयुक्त होगा। इन अवधारणाओं को समझने के लिए श्रव्य दृश्य जैसे सहायक उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है।

कक्षा कक्ष प्रबन्धन में सुधार :–

१. बालक के समक्ष स्पष्ट एवं धीरे बोले।

२. जहां तक संभव है बालक को अपने पास बैठाए तथा ध्यान रखें कि उसे अत्यधिक शोर से दूर रखा जाय। कक्षा में शोर कम करने के लिए जमीन पर पुआल बिछाया जा सकता है, अथवा दीवारों पर जूट के बोरे टाँगे जा सकते है।

३. मौखिक निर्देशों को बार–बार दुहराए।

४. कक्षा में पढ़ाते समय अपना चेहरा पुस्तक से अथवा हाथ से न ढके और न ही बालक की ओर पीठ करें।

५. बालक को ऐसे स्थान पर बैठाए जहाँ से वह आप को बोलते समय साफ–साफ देख सकें।

६. बालक/बालिका को व्याकरण के सरल नियमों तथा सरल शब्द कोष सिखाएं।

७. अध्यापक को चाहिए कि वह सरल शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग करें तथा बालक को सरल वाक्य पढ़ने को दें।

८. नये शब्दों को बोलने से पहले उन्हें श्यामपट्ट पर लिख कर स्पष्ट करें।

६. जिन बालकों को सुनने में कठिनाई होती है, ऐसे बालकों को लिखित कार्य अधिक दें जिससे वह कहीं जाने वाली हर बात भली–भांति समझ लें।

१०. बच्चों को नक्शा, ग्लोब, फ्लैश कार्ड एवं अन्य सामग्री की सहायता से पढ़ायें। इनके लिए दृष्टान्त युक्त कार्ड (illustrative card) एवं सहायक सामग्री (Reference Material) का भी प्रयोग करें।

११. ऐसे बालकों को एक ही भाषा का ज्ञान दें।

१२. कोशिश करें कि गणित की धारणाओं को मूर्त रूप देकर बालकों को समझाए, पढ़ाए जैसे उन बालकों को जिन्हें कम सुनाई देता है, जोड़ सिखाते समय ठोस वस्तुओं का प्रयोग करें।

१३. बालक, बालिका को प्रेरित करें कि वह हियरिंग एड पहनने में न झिझके और उसे सदैव पहनें।

२. दृष्टि सम्बन्धी कठिनाई :

जिन बच्चों को देखने सम्बन्धी कठिनाई है, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को उपयुक्त योजना तैयार करना होगा। इनके लिए बड़े अक्षरों वाली पाठ्य सामग्री तथा विशेष प्रकार के फर्नीचर की व्यवस्था अपेक्षित है। ब्रेल लिपि का प्रयोग करने के साथ ही गिनती सीखने के लिए गिनतारे का प्रयोग सहायक होगा। श्रव्य तथा स्पर्श सामग्री का प्रयोग करने से सीखने में मदद मिलेगी। तीन आयाम वाली शिक्षण सामग्री सुलभ करना लाभप्रद होगा। कक्षा प्रबन्ध इस प्रकार किया जायें कि अधिगम के लिए जो सामग्री बच्चे को दी जाये बच्चा उसका उचित

मात्रा में सदुपयोग कर सके। बहु–इन्द्रिय उपागम अपनाना भी सहायक सिद्ध होगा। रबर की गेंद तथा लोहे की गेंद हाथ में लेने का अवसर देकर हल्का–भारी का सम्बोध स्पष्ट किया जा सकता है।

कक्षाकक्ष प्रबन्धन में सुधार :–

यह संदर्भ अध्यापक का दायित्व है कि वह बच्चे को सिखाये कि वह विशेष सामग्रियों का प्रयोग कैसे करें। एक कक्षा अध्यापक होने के नाते आप निम्न बातों को ध्यान में रखें।

१. जहां तक संभव हो बालक को उसके परिवेश से परिचित करवाएं जिसके लिए बालकों को वस्तुओं को छूने की स्वतंत्रता हो।

२. यदि बालक को साफ नहीं दिखाई देता है तो उसे श्यामपट्ट के पास एकदम सामने यदि संभव हो तो खिड़की के पास बैठाए।

३. कुछ बच्चे जिनकी दृष्टि में कुछ दोष होता है वे प्रकाश के प्रति बड़े संवेदनशील होते है, अतः ऐसे बच्चों को सीधे प्रकाश में नहीं बैठाना चाहिए।

४. यह ध्यान रखें कि कमरे में विभिन्न स्रोत से आने वाले प्रकाश समान रूप से कमरे में फैले। उग्र प्रकाश तथा परछाई वाले प्रकाश से बचें।

५. कोशिश करें कि मुद्रित सामग्री बड़े अक्षरों में साफ–साफ लिखी हो जिससे बच्चे लेखन को भली–भांति पढ़ सकें।

६. बालक को लगातार टोकते न रहे, अपितु उस पर निगरानी अवश्य रखें।

७. श्यामपट्ट पर लिखने के पूर्व शब्दों को बोलकर स्पष्ट कर दें।

८. बच्चे आसानी से पढ़ सके इसके लिए काले रंग का मोटा मार्कर का प्रयोग करें।

९. कार्ड के किनारों पर ब्रेल के चिन्ह अंकित किए जा सकते है जो कि दोनों प्रकार के बच्चों दृष्टिहीन तथा सामान्य बच्चों के लिए प्रयोग में लाए जा सकते है।

१०. बच्चों को इशारे से न बुलाकर नाम लेकर बुलाए।

११. सामान्य बच्चों को प्रेरित करे कि वे अपने नोट्स कम दृष्टि वाले बच्चों को दे या फिर नोट्स ब्रेल में पढ़कर सुनाए।

१२. थोड़े से सुधार के साथ कार्यों को सुगमतापूर्वक कराया जा सकता है जैसे फुटबाल में घंटी लगा दे जिससे इस प्रकार के बच्चे सामान्य बच्चों के साथ खेल सकें।

३. अस्थि सम्बन्धी विकलांगता :

कक्षा में कभी–कभी ऐसे बच्चे भी आ जाते है कि जो अस्थि सम्बन्धी विकलांगता से ग्रस्त होते हैं या स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी समस्या से ग्रस्त होते हैं। कुछ बच्चों के शरीर के ऊपरी भाग में एवं कुछ के निचले भाग में विकार हो सकते है। जिन बच्चों के शरीर के निचले अंग में विकार होते है उनकी मदद के लिए सहायक उपकरण आवश्यक है। इन बच्चों के बैठने की ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जो किसी प्रकार का व्यवधान न करें। अस्थि सम्बन्धी विकार से ग्रस्त बच्चों को लिखना पढ़ना सीखने के लिए विशेष प्रकार के उपकरण पुस्तक को लैम्प बोर्ड में लगाने वाला उपकरण, पन्ना पलटने में, मदद करने वाला उपकरण आदि सुलभ कराने होंगे। खेलकूद, रेखाचित्र, निर्माण, चित्रकारी आदि गतिविधियां इनके लिए उपयुक्त होगी।

कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सुधार :–

१. यदि बालक/बालिका व्हीलचेयर का प्रयोग करता है तब वह ध्यान रखें कि मेज की ऊँचाई व्हील चेयर की ऊँचाई के अनुपात में हो ताकि बालक/बालिका को पढ़ने/लिखने में कोई कष्ट न हो।

२. ऐसे बालक को अपना कार्य समाप्त करने के लिए पर्याप्त समय दें।

३. यदि बालक के हाथ में चोट लगी हो तो उसे गृहकार्य कम दें।

४. किसी अन्य बालक या सहयोगी को इस बालक के लिए नियुक्त करें जो इस बालक के लिए वस्तुएं इधर–उधर से लाएं एवं ले जा सकें।

५. यदि बालक का एक हाथ लिखने में अक्षम है तो उसे दूसरे हाथ से लिखने के लिए प्रेरित करें।

६. अध्यापक अन्य बालकों को प्रेरित करें कि वह न चल सकने वाले बालकों को धक्का न दे जिससे उन्हें चोट न लग सके। जैसे व्हीलचेयर को ढलान पर धक्का न दें।

७. यदि बालक की चलने की अक्षमता के कारण उसकी चाल में परिवर्तन होता है तो अध्यापक को चाहिए कि वह अन्य बालकों को प्रेरित करें कि वे उसकी इस चाल पर उस बालक को न चिढ़ाए।

४. मानसिक पिछड़ापन :

कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे होते है कि जो शिक्षा पाने योग्य है किन्तु मानसिक रूप से पिछ़डे होते है, और कुछ अधिगम की दृष्टि से विकलांग होते है ऐसे बच्चों के लिए लचीली शिक्षण विद्या अपनायी जानी चाहिए जिससे खेल तथा आराम के बीच सन्तुलन कायम रहे क्योंकि मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों को आराम की अधिक आवश्यकता होती है। प्राथमिक कक्षाओं में इनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसी अधिगम गतिविधियों का आयोजन उपयुक्त होगा जिनमें खेल, शारीरिक क्रियाओं, संगीत आदि का समावेश हो। किसी संकल्पना को समुचित ढंग से स्पष्ट करने के लिए बच्चों को स्वयं करके सीखने का अवसर देना उपयुक्त होगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कक्षा का वातावरण जो पूर्णरूप से स्नेहमय सौहार्द तथा अधिगम के लिए अनुकूल हो।

बच्चे को अपनी रुचि के अनुसार गतिविधि के चयन का अवसर दिया जाना चाहिए। कुछ ऐसी गतिविधियाँ भी होनी चाहिए जिसमें हाथों एवं नेत्रों के संचालन के बीच तालमेल की आवश्यकता हो।

कक्षा कक्ष प्रबन्ध में सुधार :

१. चित्रों की सहायता से नये शब्दों का ज्ञान कराए।

२. ऐसी सामग्रियों का प्रयोग करे जो बालक के विकास सम्बन्धी स्तर से मेल रखती हो।

३. पाठ को छोटे–छोटे भागों–पदों में पढ़ायें (Present the task in small steps) एवं बार–बार दुहराए। एक बार महत्वपूर्ण क्रमों की रूपरेखा अवश्य बता दें।

४. बालक से पहले सरल कार्य करवाए फिर कठिन कार्य। मध्य श्रेणी के धीमें कार्यों को लेकर अपने कार्य की शुरुआत करें।

५. शिक्षा देते समय गतिविधि आधारित सिद्धान्त का पालन करें जैसे – प्ले वे मैथड।

६. बालक को इस प्रकार का कार्य करने को दे जिससे उसके आंख हाथ सम्बन्धी तालमेल में विकास हो सके। जैसे कागज को कैंची से काटना।

७. बालक की स्मृति शक्ति तथा धारणा शक्ति को विकसित करने के लिए उससे बार–बार अभ्यास करवाएं।

८. बालक को प्रशिक्षण दें कि वह अपना कार्य क्रमबद्ध तरीके से करें। इस प्रकार करने से बालक की विश्लेषण तथा समस्या का समाधान करने की क्षमता विकसित होती है। उदाहरणार्थ – अध्यापक फ्लैश कार्डों के माध्यम से अर्थपूर्ण कहानी जैसे – चाय बनाने के तरीके को गलत क्रम में रखे और बालक को सही क्रम में उन फ्लैश कार्डों को रखते हुए कहानी बनाने को कहे।

९. बालक चित्रों की संख्या देखकर संख्या तथा शब्दों को आपस में मिलान करें। इस तरह के खेल बालक द्वारा करवाए जा सकते है।

१०. अध्यापक सहायक सामग्री के माध्यम से बालक की एकाग्रता शक्ति को विकसित करें।

११. कार्य सारणी में जल्दी–जल्दी परिवर्तन न करें। कक्षा की सामग्री तथा कक्षा की व्यवस्था में परिवर्तन करने से पूर्व छात्रों को अवश्य बता दें।

१२. बालकों को वास्तविक जीवन सम्बन्धी कार्य करने को दें। उदाहरण के लिए – मुद्रा के विषय में पढ़ाते समय अध्यापक घर सम्बन्धित जीवन का उदाहरण ले सकता है। यदि तुम ३ सेब खरीदने बाजार जाते हो और प्रत्येक सेब एक रु० का है। तब तीन सेब खरीदने के लिए कितने रु० की आवश्यकता होगी और यदि तुम दुकानदार को १०रु० देते हो तो वह कितने रु० तुम्हें वापस करेगा? यदि संभव होतो इस प्रकार के सवाल चित्रों के माध्यम से करवाएं जाएं।

अधिगम की दृष्टि से अक्षमताग्रस्त बच्चे :

कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे होते है जो पढ़ने लिखने तथा अंकगणित में लगातार त्रुटियां करते हैं। आधारभूत अकादमिक कौशल से एक या एक से अधिक स्थलों में उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। किन्तु बौद्धिक विकास की दृष्टि से इन्द्रिय बोध की दृष्टि से पूर्णतः सामान्य बच्चे होते है। शिक्षक तथा अभिभावक के प्रयास करने पर भी वे अकादमिक कार्य सही ढंग से नहीं कर पाते है। तीसरी तथा चौथी कक्षा में भी वे ऐसी त्रुटियां करते है – जैसे पहली कक्षा का सामान्य विद्यार्थी करता हो। इन बच्चें को कक्षा में अधिक से अधिक अभ्यास का अवसर दिया जाना चाहिए। मिलते–जुलते आकार वाले वर्ग तथा मिलती–जुलती ध्वनियों वाले वर्ग एक साथ न सिखाएं।

कक्षा–कक्ष प्रबन्ध में सुधार :–

१. छोटे तथा संक्षिप्त निर्देश दें।

२. निर्देशों को चाक बोर्ड अथवा पोस्टर पर लिखे।

३. विभिन्न आकृतियों एवं चित्रों का भरपूर प्रयोग करें। उदाहरण देते समय ध्यान रखे कि वह अपने आप में पूर्ण हो।

४. इस प्रकार के बच्चों में एकाग्रता की कमी होती है। अतः इन बच्चों को कार्य समाप्त करने हेतु, पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए।

५. अवधारणाओं को मूर्त रूप देकर समझाए न कि सिर्फ बोलकर।

६. आरम्भ में इन बालकों को नयी क्षमताएं सिखाने के लिए छोटे–छोटे चक्रों में सिखाएं।

७. यदि इन बच्चों को सूचना देनी हो तो सूचना को छोटी–छोटी इकाई में विभक्त करके दे।

८. बालकों को नयी क्षमता सिखाते समय शब्दों को भी बोले।

६. इस बात का ध्यान रखें कि इन बालकों को किसी भी कार्य में पूर्ण बनाने के लिए उस कार्य को बार–बार दोहराने की आवश्यकता है।

१०. यदि किसी बालक को पढ़ने में कठिनाई है तो उसे बालक का मित्र या कोई अन्य उसके लिए लिखने का कार्य कर सकता है या वह निर्देशों को दुबारा पढ़ सकता है।

संदर्भ अध्यापक आपकी मदद उपरोक्त गतिविधियों में से कुछ गतिविधियों को करने में करेंगे।

१. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य कक्षा में सम्मिलित करने हेतु अध्यापक क्या–क्या करें?

- अध्यापक बालक के कार्य सम्बन्धी कार्यों का मूल्यांकन करके बालक की आवश्यकताओं को समझ सकते है।
- इस प्रकार के बालकों द्वारा प्रयोग में लायी जा रही सामग्री एवं उपकरण को अध्यापक समझे, तथा सीखे कि इनका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है।
- अध्यापक, संदर्भ अध्यापक की सहायता से अपनी कक्षा में जरूरी सुधार कर सकते है।
- विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों की जरूरतों को पूर्ण करने के लिए अध्यापक चाहे तो पाठ्यक्रम में बदलाव करें या नया पाठ्यक्रम बनाये।
- विभिन्न अक्षमताओं वाले बच्चों की शिक्षा को सरल बनाने के लिए अध्यापक विभिन्न प्रकार की रणनीतियों/निर्देशित हस्तक्षेपों का प्रयोग कर सकते है।

- यदि आवश्यक हो तो अध्यापक शिक्षण सामग्री में भी परिवर्तन कर सकते है।
- अध्यापक तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता रखे, जिससे छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति तुरन्त कर सकें। उदाहरणार्थ – लिखने में अक्षम बच्चों से मौखिक कार्य करवाना चाहिए। यदि किसी छात्र को सीखने में परेशानी होती है तो – उसे पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।
- अध्यापक को संदर्भ अध्यापक से मिलकर आगे के लिए योजना तैयार कर लेना चाहिए।
- सबसे मुख्य बात यह है कि अध्यापक इन बच्चों के साथ एक सुखद तालमेल बनाए तथा इन बच्चों को सबसे पहले स्वीकार कर औरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें।
- अध्यापक को चाहिए कि पियर सेन्स टाइजेशन (Peer sensitization) में सहायता करें।

सीखने–सीखने की प्रक्रिया में बच्चे एक दूसरे के बहुत सहायक हो सकते है, आप इसके लिए यह प्रयत्न करें :–

- बच्चों के द्वारा रोल प्ले करवाए।
- सामान्य, असामान्य दोनों श्रेणी के बच्चों को विद्यालय ले जाए।
- यदि कोई संस्था अथवा व्यक्ति इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है तो उसे अपने विद्यालय में बुलाए तथा उससे सभी बच्चों को अपने अनुभव सुनाने को कहे।
- कभी–कभी सामान्य बच्चों को भी विशिष्ट बच्चों की समस्या बतायें तथा उनसे विशिष्ट बच्चों के साथ समूह में कार्य करने अथवा खेलने इत्यादि के लिए कहे।
- सामान्य बच्चों के द्वारा आप विशिष्ट बच्चों के कार्यों में मदद करने को भी कह सकते है।

vfHkHkkodksa ds ekxZn'kZu gsrq fcUnq ¼Parents counselling½

१. अध्यापक को अभिभावक से बातचीत कर उनकी झिझक संकोच दूर करना चाहिए। माता–पिता के मन से यह बात हटानी होगी कि ये बच्चे उनके लिए सजा है । अभिभावक के मन में यह बात बिठानी होगी कि कुछ सहायता एवं उनके प्रयासों से बच्चा आम बच्चों की तरह विकसित हो सकता है। अभिभावक को इन बच्चों के साथ सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करना चाहिए। बच्चों के साथ बात–चीत कर उनकी कठिनाई को समझना चाहिए। कमियों से ज्यादा बच्चे में उपलब्ध क्षमता को विकसित करने के लिए बढ़ावा देना होगा। अभिभावक के लिए आवश्यक होगा कि वे बच्चे को दैनिक क्रियाओं यथा कपड़े पहनना, दांत साफ करना, स्नान करना, शौच क्रियाओं से निवृत्त होना, कंघी करना , भोजन करना आदि स्वयं करने की आदतें डालें।

दृष्टि बाधित बच्चों के अभिभावकों के लिए

१. बच्चों को हमेशा नाम लेकर पुकरना चाहिए एवं आवाज की दिशा में चलने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

२. बच्चे से बराबर बात करके उसकी भाषा का विकास करना चाहिए। भाषा के विकास के लिए कहानियां सुनायी जा सकती है।

३. विभिन्न वस्तुओं की सहायता से बच्चों को हल्का भारी, कम अधिक, पतला मोटा, विभिन्न आकृतियों जैसे गोल, त्रिभुज वर्ग आयत का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

४. विभिन्न घंटियों जैसे स्कूल, साइकिल/रिक्शा, मंदिर, टेलीफोन, कालवैल, आदि की घंटियों का ज्ञान कराना चाहिए।

५. अगर बच्चा दृष्टिहीन है तो रिसोर्स अध्यापक की सहायता से ब्रेल लिपि का ज्ञान दिया जाना चाहिए अथवाा ब्रेल स्कूल में भेजना चाहिए।

६. अध्यापक को विभिन्न क्रियायें स्वयं करके अभिभावक को दिखानी चाहिए ताकि अभिभावक घर पर प्रतिदिन तद्नुसार क्रियाओ का अभ्यास करा सके।

श्रवण बाधित बच्चों के अभिभावकों के लिए।

१. अभिभावक को बच्चे को श्रवणयंत्र लगवाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यदि अभिभावक सक्षम न हो तो अध्यापक को किसी स्वैच्छिक संस्था के माध्यम से बच्चे के लिए श्रवणयंत्र की व्यवस्था करानी चाहिए।

२. बच्चे को विभिन्न बोलने वाली आवाज एवं वातावरण की आवाजें जैसे जानवरों की आवाज, कार हार्न आदि के प्रति जागरुक बनाना चाहिए।

३. बच्चे को मौखिक रूप से प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार करना चाहिए।

४. अभिभावक को बच्चे से शब्दों और वाक्यों को बार–बार बोलने का अभ्यास कराकर भाषा विकास करना चाहिए।

५. बच्चे को लिप रीडिंग (Lip reading) सिखाने के लिए अभिभावक को सम्बन्धित विद्यालय में भेजने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

६. यदि बच्चा पूर्णरूप से श्रवणहीन है तो उसे सांकेतिक भाषा (Sign language and finger spelling) सिखानी चाहिए।

शारीरिक अक्षम बच्चों के अभिभावकों के लिए

१. बच्चो को शरीर के अंगों के संचालन करने में सक्षम बनाने के लिए अभिभावक को बार–बार अभ्यास करवाना चाहिए।

२. सेरीब्रल पल्सी (Cerebral Palsy) के बच्चों को फिजियोथेरेपी करवाने की सलाह देनी चाहिए।

३. बच्चों को पेन्सिल/पेन पकड़ने का अभ्यास करवाना चाहिए।

४. चलने फिरने में अक्षम बच्चों को प्रतिदिन विद्यालय में पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

मानसिक मन्द बच्चों के अभिभावकों के लिए

१. इन बच्चों के अभिभावक को अध्यापक से लगातार सम्पर्क कर पढ़ायी जाने वाली विषय सामग्री की जानकारी प्राप्त कर घर में लगातार अभ्यास कराते रहना चाहिए।

२. अभिभावक को बच्चे का नाम, परिवार के अन्य सदस्यों का नाम, पता सिखाना चाहिए। रंगों का ज्ञान कराना चाहिए।

३. अभिभावकों को इन बच्चों को किसी भी कार्य को सिखाते समय धैर्य रखना चाहिए क्योंकि ये बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा सीखने में अधिक समय लेते हैं।

-: संरक्षक :-

वृन्दा स्वरूप

आई0ए0एस0

राज्य परियोजना निदेशक

-: परामर्श :-

कल्पना अवस्थी

अपर परियोजना निदेशक डी0पी0ई0पी0

कृष्ण मोहन त्रिपाठी

अपर राज्य परियोजना निदेशक बी0ई0पी0

-: समन्वयक :-

ममता अग्रवाल

वरिष्ठ विशेषज्ञ सामुदायिक सहभागिता

-: संदर्भ एवं सहयोग :-

डॉ0 नीरजा शुक्ला	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष एन0सी0ई0आर0टी0	डॉ0 अनिता जुल्का	रीडर, एन0सी0ई0आर0टी0
डॉ0 हामिदा अजीज	रीडर, एन0सी0ई0आर0टी0	डॉ0 अनुपम आहूजा	प्रवक्ता, एन0सी0ई0आर0टी0

-: लेखक मण्डल :-

श्रीमती सुभाषिणी पालीवाल	वरिष्ठ विशेषज्ञ, रा0प0का0, लखनऊ	श्रीमती रश्मि सिन्हा	विशेषज्ञ, रा0प0का0, लखनऊ
श्री आर0के0 सिंह	विशेषज्ञ, रा0प0का0, लखनऊ	श्री जग मोहन सिंह	परामर्शी, सीमेट, इलाहाबाद
श्री राम मिलन गिरि	विशेषज्ञ, रा0प0का0, लखनऊ	श्रीमती शशि बाजपेई	प्रवक्ता, डायट, लखनऊ

विशेष आभार : श्री एन0के0 जंगीरा, श्री चन्दीप कौर, सुश्री अंजुम सिबिया

सर्वाधिकार सुरक्षित, राज्य परियोजना कार्यालय, निशातगंज, लखनऊ।

प्रकाशक राज्य परियोजना कार्यालय, निशातगंज, लखनऊ।

इस पुस्तिका में विभिन्न स्त्रोतों से सामग्री संकलित की गयी है हम उन सभी के प्रति आभारी है।

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : मनोज गोयल, दीपक कुमार

आमुख

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य शिक्षा का सार्वजनीकरण है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन सभी 5-10 प्रतिशत बच्चों को जो दृष्टि संबंधी, श्रवण संबंधी, वाणी संबंधी, अस्थि संबंधी एवं मानसिक अक्षमताओं से ग्रस्त हैं, विद्यालय में लाया जाना है। विभिन्न अक्षमताओं में सबसे अधिक संख्या शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों की है। पूर्ण रूप से दृष्टिहीन बच्चों की संख्या सबसे कम है। इन बच्चों में से अधिकांश ऐसे अक्षम बच्चे हैं जिसके लिए कोई विशेष शिक्षण विधि की आवश्यकता नहीं होती और थोड़े से विशेष प्रयास के साथ इन बच्चों को अन्य सामान्य बच्चों की तरह शिक्षा की मुख्य धारा में लाया जा सकता है।

पहले अभिभावक अक्षम/विकलांग बच्चों को बिन बुलाई आपदा अथवा अभिशाप समझते थे किन्तु आज सोच एवं व्यवहार में परिवर्तन आ गया है। आज विकलांग व्यक्तियों ने अधिकांश क्षेत्रों में सफलता पाई है और उन्होंने दूसरों को सहारा देना शुरू कर दिया है। अक्षम बच्चों में यदि एक अक्षमता है तो अनेक क्षमताएं भी हैं। ये देखा गया है कि शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे मानसिक रूप से अधिक जागरूक एवं क्रियाशील होते हैं। अभिभावक का यह दायित्व है कि वे बच्चों में निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने के लिए उत्साहित करें।

समेकित शिक्षा में विभिन्न प्रकार के माइल्ड एवं मॉडरेट कम और मध्यम श्रेणी विकलांग बच्चों को जो विद्यालय से बाहर हैं प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा में सामान्य बच्चों के साथ लाया जाना है ताकि उनका मानसिक विकास सामान्य बच्चों की तरह हो सके। इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि विकलांगता को लेकर संबोधन में, व्यवहार में, खेल में, कक्षा में, मैदान में एवं घर में कोई लज्जाजनक स्थिति उत्पन्न न हो।

यह संदर्शिका तैयार करते समय यह ध्यान दिया गया है कि ऐसे बच्चों की विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं की पहचान कर कक्षा में उनके साथ व्यवहार, तौर तरीके और प्रणाली के संदर्भ में शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सके। साथ ही अभिभावक भी अपने बच्चों के साथ संतुलित व्यवहार कर सकें और यह पुस्तक उनके लिए भी मददगार सिद्ध हो। शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे सिर्फ सहानुभूति के ही पात्र नहीं हैं इन्हें उचित वातावरण और भावनात्मक समर्थन के साथ-साथ शिक्षण प्रशिक्षण की भी जरूरत है।

ऐसे बच्चों जो अपनी शारीरिक अक्षमताओं के कारण प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं, स्कूल की दुनिया से बाहर हैं, उनमें निहित क्षमता का विकास कर उनमें आत्म विश्वास जगाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षक ही पहल कर सकते हैं। वे सुविधा सम्पन्न नहीं हैं और उनकी परिस्थितियां भी आसान नहीं हैं। इसलिए उनके प्रति हम सबकी जिम्मेदारी है। इस पुस्तिका को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझावों का स्वागत है।

वृन्दा स्वरूप